03–05–2013 दादी गुलज़ार

आज ओ.आर.सी. का प्रांगण विशेष एनर्जी से ओत प्रोत हो रहा था क्योंकि आज सारे ही दिल्ली ज़ोन के लगभग 700 टीचर्स आदरनीय गुल्ज़ार दादी जी के स्वागत कार्यक्रम में दिल्ली के विभिन्न भागों से पहुँची थीं। ओ.आर.सी. की छटा ही निराली थी मिनी हॉल बहुत ही सुन्दर सजाया गया था। दादीजी के आगमन पर सभी बड़ी बहनों ने ट्रेनिंग सेन्टर पर दादी जी को रिसीव किया। ट्रेनिंग सेन्टर की मेन एन्ट्री से मिनी हॉल तक टीचर्स बहनें लाइन में खड़ी थी और दादीजी से दृष्टि लेते आगे बढ़ती रही। हॉल में पहुँचने पर सारी ही टीचर्स बहनें खड़ी हो गई और दादीजी ने खड़े होकर सभी को बहुत ही स्नेह भरी शक्तिशाली दृष्टि देकर भाव–विभोर कर दिया। दादी जी के आगमन से पूर्व आदरणीय बृजमोहन भाईजी ने क्लास कराया था और दादीजी के आगमन पर स्वागत कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें एक डायलॉग दिल्ली पाण्डव भवन की बहनों ने और एक डायलॉग दिल्ली ओ.आर.सी. की बहनों ने किया। दादीजी के स्वागत में बाबा को थैंक्स देते हुए बहनों ने बहुत सुन्दर गीत गाया "हजारों धन्यवाद हैं ओ मेरे बाबा"। फूल मालाएँ आदि से स्वागत करने के पश्चात चक्रधारी बहन ने स्वागत के बोल रखे जिसमें गुल्ज़ार दादीजी की महिमा एवं दिल्ली का नेचृत्व बताते कहा– कि कैसे बाबा ने इस रथ को पसन्द किया। आशा बहन ने दादीजी की साथी बहनें जो 7 मास सेवा पर उपस्थित थीं उनका भी स्वागत किया। उस समय सबके नयन बाबा के व दादीजी के प्यार में गीले हो गए फिर तो आदरणीय गुल्ज़ार दादी ने दिल्ली का आह्वान करते हुए कहा–

आज के दिन विघ्नों की समाप्ति और सदा निर्विघ्न रहने का शुभ दिन है बाबा की रही हुई बात दिल्ली को ही पूरी करनी है दिल्ली ऐसा ज़ोन हो जो बाबा को दिल में छिपाने वाला, बसाने वाला और निर्विघ्न। बाबा को दिल में बिठा दो तो सब विघ्न खत्म। बाबा को दिल में बिठाना तो आता है ना! फिर आपका दिल कैसा होगा– सदा मस्त, नाचने वाला। भले स्टूडेन्टस कैसे भी हों हमें शुभ भावना शुभ कामना रखकर परिवर्तन करना ही है। क्योंकि वह तो परवश हैं ही– ऐसा नहीं कहो कि यह तो है ही ऐसा। टीचर्स माना टीच करके बदलने वाली। अभी अगर बाबा आए तो खुश खबरी सुनाएं कि हम निर्विघ्न बनकर ही दिखायेंगे, कोई भी रिपोर्ट नहीं आएगी। बात हुई और खत्म। यह राजधानी है यहाँ सभी को आना है। सभी पूछते हैं हमें जगह मिलेगी? तो लायक को लाएंगे? लायक बनाना पड़ेगा। बाबा की आशा है सारा ज़ोन निर्विघ्न हो। सारे ज़ोन एनाउन्स हों और दिल्ली नम्बर वन लेवे। तो यह बाबा को करके दिखाना है। हरेक अपने सेन्टर को ठीक करने की जिम्मेवारी लेवे तो सब ठीक हो जाएगा। संकल्प करें तो बाबा भी मददगार है। हम एक कदम उठाते वह हज़ार कदम उठाकर मदद करता। बाबा को करके दिखाना। तो हो सकता है? एक दो के साथी बनकर निर्विघ्न ज़ोन बनाएं। ऐसा पुरूषार्थ करें जो बाबा कहे दिल्ली ज़ोन निर्विघ्न है। आज देखो दिल्ली की टीचर्स

का क्लास रास ही रास कर रहा है। यह फाउण्डेशन पड़ गया। क्योंकि मूड ठीक है। अगर मुरझाई हुई शक्ल होगी तो क्या रास करेंगे? दिल्ली निर्विघ्न होगा यह संकल्प करते हो? जो सुना वह करना है। सुना तो बहुत है अभी करना है। ज़ोर से बोलो। आज का दिन नोट करो करना ही है।

तत्पश्चात दादी जी से आशा बहन ने प्रश्न-उत्तर किए

प्रश्नः दादी जी सदा निर्विघ्न रहने का सहज पुरूषार्थ क्या है?

उत्तर- देखो, सभी से गलती होती है तो उसे भी क्षमा करें। प्यार से किसी को समझाओ तो वह समझ जाते हैं। प्यार से न सुनने वाला भी सुनने लगेगा। जब हम छोटे थे बाबा हमें हर मास के लिए टॉपिक देता था कि इस मास में यह परिवर्तन करना है जो हम करते रहे। विस्तार को सार में लाना। यही निर्विघ्न बनने का सहज पुरूषार्थ है।

प्रश्नः संगठन को निर्विघ्न कैसे बनाएं?

उत्तर- किसी से गलती होती है तो उसे बढ़ाओ नहीं क्योंकि वह दूसरे को सुनाएगा जिससे उसकी खुशबू वायुमंडल में फैलेगी। अगर गलती करने वाला बाबा का बना है तो कुछ तो उसमें है- उम्मीद सबमें रखनी है। हरेक को प्यार से बदलना है। हरेक के अंदर गुणों को देखने का एवं शुद्ध भावना शुद्ध परिवर्तन का चश्मा पहनो तो वह भी बदल जाएगा।

प्रश्नः हम सेवा करते हुए एक दूसरे के साथ हल्के रहें उसकी विधि क्या है? उत्तर- एक दूसरे के प्रति संकल्प करो, दोनों मिलकर संकल्प करो कि हम एक होकर दिखायेंगे। एक दूसरे के साथी बन जाओ एक दूसरे को समझने की कोशिश करें और एक दूसरे को रिस्पेक्ट से देखें।

प्रश्न- कभी-कभी उमंग-उत्साह कम हो जाता है और आलस्य अलबेलेपन का रूप ले लेता है उसका कारण क्या है?

उत्तर- उमंग उत्साह वाले भी सेन्टर पर कोई न कोई होते हैं उनके संग रूह रिहान करो। तो आपमें भी परिवर्तन आ जाएगा। उसकी विशेषता धारण करो, उसका विशेष गुण उठा लो। जब दूसरों को देखते हैं तो अलबेलापन आता है

प्रश्न- बिना कारण के खुशी गुम क्यों होती है?

उत्तर- मन में व्यर्थ संकल्प हैं। अगर किसी की बात दिल में चुभ जाती है तो व्यर्थ चलता है। बाबा ने कहा कि शुभ सोचना लेकिन फिर भी बुद्धि व्यर्थ तरफ चली जाती है उसके लिए अपनी कन्ट्रोलिंग पॉवर को बढ़ाओ। योग के बाद सोचो

कि बाबा ने हमारे जीवन के लिए कौन सी बातें कही हैं? संतुष्टमणि बन जाओ और दूसरों को संतुष्ट करो। दूसरे को चेंज करने से पहले अपने आपको चेंज करो। शुभ भावना बहुत काम करती है जो नहीं बदलता उसे वायब्रेशन्स से ठीक करो। बाबा हमें यही पाठ पढ़ाता था कि गुण ग्राही बनो, गुणों का ही वर्णन करो। कैसा भी है बाबा का तो बना है ना! कुछ तो विशेषता उसके अंदर है ना। यह शुभ भावना रखो। यह बदलेगा ही नहीं यह सोचकर उसकी तकदीर को लकीर नहीं लगाओ। मम्मा ने हरेक को बदला। मम्मा ने बहुत मेहनत की। मम्मा ने अच्छे-2 सेम्पल बनाए। मम्मा सबसे प्यार से चलती थी। मम्मा को देखकर मम्मा जैसा बनने का उमंग आता था। दिलशिकस्त नहीं होते थे कि हम ऐसा बन ही नहीं सकते। मनुष्य चाहे तो क्या नहीं बन सकता। बाबा ने कहा और मैंने किया। बाबा की मुरली का महत्व रखकर हमें करना ही है।

प्रश्न- पुराना संस्कार इमर्ज हो जाता है तो क्या करें?

उत्तर- वह ड्रामा में हमारा पेपर होता है जिससे पता पड़ता है कि हमारा फाउण्डेशन कच्चा है। अगर पुरूषार्थ में फर्क पड़ता है तो उसकी पीठ कर परिवर्तन करें, अपने ऊपर ध्यान दें। बाबा से प्यार सबका है। उस समय बाबा के प्यार को याद करो बातों को याद नहीं करो। अपने दिल में बाबा को बिठा लो तो भरी हुई दिल में और कोई बैठ नहीं सकता। दिल में बाबा बैठा है तो हम अकेले नहीं हैं, उल्टा कर्म नहीं होगा।

प्रश्न- सेवा के क्षेत्र में अगर कोई हमारे जैसा करने की रीस करता है तो उस समय क्या करें?

उत्तर- दिल में जब सदा बाबा को बिठा ही दिया तो यह सब नहीं होगा जिसकी दिल अच्छी होगी भले ही उसका सेन्टर छोटा ही क्यों न हो बार-बार मन होगा उसके पास जाने का।

प्रश्न- बाबा की दिल पसन्द सेवा क्या है? बाबा सेवा के क्षेत्र में किन-किन बातों को देखते हैं?

उत्तर- बाबा देखते सेवा करते समय कोई मिलावट तो नहीं अगर नाम कमाने के लिए सेवा करते तो वह सेवा बाबा को पसन्द नहीं आती। बाबा देखता दिल में क्या रखकर सेवा की सेवाभाव या लालच भाव। सच्ची दिल से सेवा करने वालों पर ही साहेब राजी होता है। जिस भाव से सेवा करते उसका वायब्रेशन जिज्ञासुओं को भी आता है थोड़े समय के लिए वह भी उमंग-उत्साह से सहयोगी बनेगा बाद में धोखा देगा।

प्रश्न- दादी जी बाबा के दिल में हम कैसे बैठे?

उत्तर- बाबा को दिल में बिठाया तो हम कहाँ जाएंगे, दिल में ही जाएंगे। बाबा का दिल हमसे खुश रहेगा तो हम भी बाबा के दिल में बैठेंगे क्योंकि कोई से दिल खुश नहीं

होती तो क्या करते हैं– कहते हैं इसको निकालो। तो बाबा की दिल हमसे खुश हो तब हम बाबा के दिल में बैठेंगे।

तत्पश्चात नीलू बहन ने दादीजी के संग बिताए हुए उन कठिन दिनों का समाचार सुनाया जब दादीजी हॉस्पिटल में थे। दादीजी के द्वारा अस्पताल में जो सेवाएं हुई वे अति विलक्षण थी। डॉक्टर्स की कितनी सेवा–धारणा युक्त स्थिति से हुई उसका एक उदाहरण दादीजी ने अपने अनुभव में उपस्थित किया।

दादी जी ने केक काटा। दादी जी का श्रंगार सभी सेन्टर्स की टीचर्स बहनों ने नम्बरवार किया। अन्त में सबको केक की टोली मिली और सबने भोजन के लिए प्रस्थान किया। यह था आज का दिव्य समाचार। फिर मिलते रहेंगे।

रात्रि भोजन के पश्चात् दादीजी ओ0आर0सी0 की सभी बहनों एवं कुछ दिल्ली की वरिष्ठ टीचर्स बहनों के साथ बैठी। वे पल बड़ी ही रमणीकता से भरपूर रहे। बहनों ने दादीजी के सम्मुख गीत, संगीत एवं डायलॉग आदि प्रस्तुत किए।

ओमशान्ति